Siyah Faam Ghulam (Hindi)

तख़रीज शुदा

(12 मो'जिज़ात)

सियाह फ़ाम ग़ुलाम

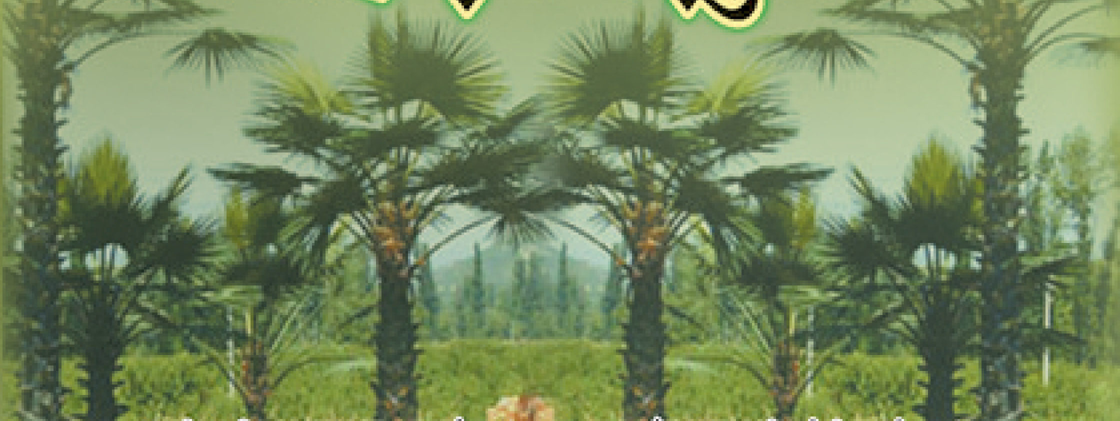

सरकार की बशरिय्यत का इन्कार करना कैसा ? 7

मैं गुमराही से कैसे निकला ! 10

वालिदैने करीमैन जन्नती हैं 19

फ़ौत शुदा मदनी मुन्ने ज़िन्दा हो गए ! 21

गुस्ताख़ को ज़मीन ने क़बूल न किया 24

हाथ मिलाने के 14 मदनी फूल 27

अल्लाह के लिये महब्बत रखने के 8 फ़ज़ाइल 32

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللہ عزوجل जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المستطرف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

सियाह फ़ाम ग़ुलाम (12 मो'जिज़ात)

येह रिसाला **(सियाह फ़ाम ग़ुलाम** (12 मो'जिज़ात) **)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دامت برکاتہم العالیہ ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 98987 32611 • Email : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

सियाह फ़ाम ग़ुलाम (12 मो'जिज़ात)[1]

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (35 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **आप का दिल सीने में झूम उठेगा ।**

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

इमामुस्साबिरीन, सय्यिदुश्शाकिरीन, सुल्त़ानुल मुतवक्किलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : जिब्रईल (عَلَيْهِ السَّلَام) ने मुझ से अ़र्ज़ की, कि रब तआ़ला फ़रमाता है : **ऐ मुह़म्मद !** (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं कि तुम्हारा **उम्मती** तुम पर **एक** बार दुरूद भेजे, मैं उस पर **दस** रह़मतें नाज़िल करूं और **आप** की **उम्मत** में से जो कोई **एक** सलाम भेजे, मैं उस पर **दस** सलाम भेजूं । (مِشْكَاةُ الْمَصَابِيح، ج ۱ ص ۱۸۹، حديث ۹۲۸، دارالكتب العلمية بيروت)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : रब के सलाम भेजने से मुराद या तो ब ज़रीअ़ए मलाएका सलाम कहलवाना है या आफ़तों और मुसीबतों से सलामत रखना । (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 102, ज़ियाउल क़ुरआन)

मदीना

1 : येह बयान अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के 12 रबीउ़न्नूर शरीफ़ (1430 हि.) के **इज्तिमाए मीलाद** में फ़रमाया । ज़रूरी तरमीम के साथ तह़रीरन ह़ाज़िरे ख़िदमत है ।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

मुस्त़फ़ा जाने रह़मत पे लाखों सलाम

शम्ए बज़्मे हिदायत पे लाखों सलाम

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾1﴿ सियाह फ़ाम ग़ुलाम

सह़राए अ़रब में एक क़ाफ़िला अपनी मन्ज़िल की त़रफ़ रवां दवां था। इस्नाए राह (या'नी रास्ते में) पानी **ख़त्म** हो गया। क़ाफ़िले वाले शिद्दते प्यास से बेताब हो गए और मौत उन के सरों पर मंडलाने लगी कि करम हो गया :

ناگہانی آں مُغیثِ ہر دو کون
مصطفٰی پیداشُدہ از بہرِ عون

या'नी अचानक दोनों जहां के फ़रियाद रस मीठे मीठे **मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन की इमदाद के लिये तशरीफ़ ले आए। अहले क़ाफ़िला की जान में जान आ गई ! **अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "वोह सामने जो टीला है उस के पीछे एक सांडनी सुवार (या'नी ऊंट सुवार) **सियाह फ़ाम ह़ब्शी ग़ुलाम** सुवार गुज़र रहा है, उस के पास एक मश्कीज़ा है, उसे सांडनी समेत मेरे पास ले आओ।" चुनान्चे कुछ लोग टीले के उस पार पहुंचे तो देखा कि वाक़ेई एक सांडनी सुवार **ह़ब्शी ग़ुलाम** जा रहा है। लोग उस को **ताजदारे रिसालत** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा अ़ज़मत में ले आए। शहन्शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस **सियाह**

फ़ाम ग़ुलाम से मश्कीज़ा ले कर अपना दस्ते बा बरकत मश्कीज़े पर फैरा और मश्कीज़े का मुंह खोल दिया और फ़रमाया :

"**आओ** ! प्यासो ! अपनी प्यास बुझाओ ।" चुनान्चे अहले क़ाफ़िला ने ख़ूब सैर हो कर पानी पिया और अपने बरतन भी भर लिये । वोह **हब्शी ग़ुलाम** येह मो'जिज़ा देख कर **नबियों के सरवर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दस्ते अन्वर चूमने लगा । **सरकारे नामदार** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते पुर अन्वार उस के चेहरे पर फैर दिया ।

شُد سپید آں زنگی زادۂ حبش
ہمچو بدر و روزِ روشن شُد شبش

या'नी उस हब्शी का सियाह चेहरा ऐसा सफ़ेद हो गया जैसा कि चौदहवीं का चांद अंधेरी रात को रोज़े रोशन की तरह मुनव्वर कर देता है । उस हब्शी की ज़बान से कलिमए शहादत जारी हो गया और वोह **मुसल्मान** हो गया और यूं उस का दिल भी रोशन हो गया । जब मुसल्मान हो कर वोह अपने मालिक के पास पहुंचा तो मालिक ने उसे पहचानने से ही इन्कार कर दिया । वोह बोला : मैं वोही आप का ग़ुलाम हूं । मालिक ने कहा : वोह तो **सियाह फ़ाम ग़ुलाम** था । कहा : ठीक है मगर मैं **मदनी हुज़ूर सरापा नूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान ला चुका हूं । मैं ने ऐसे **नूरे मुजस्सम** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ग़ुलामी इख़्तियार कर ली है कि उस ने मुझे बद्रे मुनीर (या'नी चौदहवीं का रोशन चांद) बना दिया, जिस की सोहबत में पहुंच कर सब रंग उड़ जाते हैं, वोह तो कुफ़्र व मा'सिय्यत

की सियाह रंगत को भी दूर फ़रमा देते हैं, अगर मेरे चेहरे का सियाह रंग उड़ गया तो इस में कौन सी **तअ़ज्जुब** की बात है !

(मुलख़्ख़स अज़ मस्नवी शरीफ़ मुतरजम, स. 262)

जो गदा देखो लिये जाता है तोड़ा नूर का
नूर की सरकार है क्या इस में तोड़ा नूर का

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दो जहान के सुल्त़ान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने अ़ज़्मत निशान पर मेरी जान क़ुरबान ! **अल्लाह अल्लाह** ! पहाड़ के पीछे गुज़रने वाले आदमी की भी किस शान से ख़बर दें कि उस का रंग काला है और वोह सांडनी पर सुवार है और उस के पास मश्कीज़ा भी है, फिर अ़त़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ से ऐसा करम फ़रमाया कि मश्कीज़े के पानी ने सारे क़ाफ़िले को किफ़ायत किया और मश्कीज़ा उसी त़रह़ भरा रहा, मज़ीद **सियाह फ़ाम ग़ुलाम** के मुंह पर **नूरानी हाथ** फैर कर काले चेहरे को **नूर नूर** कर दिया ह़त्ता कि उस का दिल भी रोशन हो गया और मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गया।

नूर वाला आया है नूर ले कर आया है
सारे आ़लम में येह देखो कैसा नूर छाया है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾2﴿ रोशनी बख़्श चेहरा

ह़ज़रते सय्यिदुना असीद बिन अबी अनास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं **: मदीने के ताजदार** , शहन्शाहे आ़ली **वक़ार** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहक़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (ابن سنی)

एक बार मेरे चेहरे और सीने पर अपना दस्ते पुर अन्वार फैर दिया । इस की बरकत येह ज़ाहिर हुई कि मैं जब भी किसी अंधेरे घर में दाख़िल होता वोह घर **रोशन** हो जाता ।

(الخصائص الکبری للسیوطی ج۲ص۱۴۲ دار الکتب العلمیة بیروت ،تاریخ دمشق ج۲۰ ص ۲۱)

चमक तुझ से पाते हैं सब पाने वाले
मेरा दिल भी चमका दे चमकाने वाले

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿3﴾ सरापा नूर की रोशनी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी के चेहरे और सीने पर दस्ते पुर अन्वार फैर दें तो वोह रोशनी देने लग जाए तो ख़ुद **हुज़ूर सरापा नूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अपनी नूरानियत का क्या आलम होगा ! "**दारिमी शरीफ़**" में है : हज़रते सय्यिदुना **अब्दुल्लाह बिन अब्बास** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : "जब **सरकारे नामदार** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم गुफ़्तगू फ़रमाते तो देखा जाता गोया हुज़ूर पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अगले मुबारक दांतों की मुक़द्दस खिड़कियों से नूर निकल रहा है ।"

(سُنَنُ الدّارِمِیّ ج ۱ ص ۴۴ رقم ۵۸، دارالکتاب العربی بیروت)

हैबते आरिज़ से थर्राता है शो'ला नूर का
कफ़्शे पा पर गिर के बन जाता है गुफ़्फ़ा नूर का

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर सुब्ह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

﴾4﴿ दीवारें रोशन हो जाएं

''शिफ़ा शरीफ़'' में है **: जब रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम,** शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **मुस्कुराते थे तो दरो दीवार रोशन हो जाते।** (अश्शिफ़ा, स. 61, मर्कज़े अहले सुन्नत बरकाते रज़ा, हिन्द)

अब मुस्कुराते आइये सूए गुनाहगार

आक़ा अंधेरी क़ब्र में अ़त्तार आ गया

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾5﴿ गुमशुदा सूई

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا रिवायत फ़रमाती हैं **:** मैं सह़री के वक़्त घर में कपड़े सी रही थी कि अचानक **सूई** हाथ से गिर गई और साथ ही चराग़ भी बुझ गया। इतने में **मदीने के ताजदार,** मम्बए़ अन्वार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم घर में दाख़िल हुए और सारा घर मदीने के ताजवर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर के नूर से **रोशन** व मुनव्वर हो गया और **गुमशुदा सूई** मिल गई। **(اَلْقَوْلُ الْبَدِیع، ص ۳۰۲ موسسة الريان بيروت)**

सूज़ने[1] गुमशुदा मिलती है तबस्सुम से तेरे

शाम को सुब्ह बनाता है उजाला तेरा

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मदीना

1: सूज़न या'नी सूई

سُبْحٰنَ الله ! हुज़ूरे पुरनूर, सरापा नूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने नूरुन अ़ला नूर की भी क्या बात है ! **मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : रह़मते आ़लम, **नूरे मुजस्सम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बशर भी हैं और नूर भी या'नी नूरी बशर हैं । ज़ाहिरी जिस्म शरीफ़ बशर है और ह़क़ीक़त नूर है ।

(रिसालए नूर मअ़ रसाइले नईमिय्या, स. 39,40, ज़ियाउल क़ुरआन पब्लीकेशन्ज़)

सरकार की बशरिय्यत का इन्कार करना कैसा ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बेशक हमारे मदनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़क़ीक़त नूर है मगर येह याद रखिये कि बशरिय्यत के इन्कार की इजाज़त नहीं । चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की **बशरिय्यत** का मुत़्लक़न इन्कार **कुफ़्र** है । (फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 358) लेकिन आप की बशरिय्यत आ़म इन्सानों की त़रह़ नहीं बल्कि आप सय्यिदुल बशर, अफ़्ज़लुल बशर और ख़ैरुल बशर हैं ।

परवर्द गार का फ़रमाने नूर बार है :

قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّ كِتٰبٌ مُّبِيْنٌ ۙ﴿۱۵﴾ (پ ٦، المآئده ١٥)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तुम्हारे पास **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की त़रफ़ से एक नूर आया और रोशन किताब ।

मज़्कूरा बाला आयते मुबारका में नूर से मुराद हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं। चुनान्चे सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन जरीर त़बरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मुतवफ़्फ़ा 310 हिजरी) ने फ़रमाया : **يَعْنِىْ بِالنُّوْرِ مُحَمَّدًا** (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) या'नी **नूर** से मुराद **मुह़म्मदे** मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं।

(تَفْسِيْرُ الطَّبَرِىّ ج ۴ ص ۵۰۲ دار الكتب العلمية بيروت)

जलीलुल क़द्र, ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस इमाम अबू बक्र **अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपनी "**अल मुसन्नफ़**" में ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत की, वोह कहते हैं, मैं ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ! मेरे मां बाप हु़ज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर क़ुरबान ! मुझे बताइये कि सब से पहले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क्या चीज़ बनाई ?" फ़रमाया : ऐ जाबिर ! बेशक बिल यक़ीन, **अल्लाह** तआ़ला ने तमाम मख़्लूक़ात से पहले तेरे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का **नूर** अपने **नूर** से पैदा फ़रमाया। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 30, स. 658, **الجزءُ المفقود مِن الجزء الاوّل مِنَ المُصَنَّف، لِعبدالرّزّاق**, स. 63, रक़म : 18) **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** मेरा मश्वरा है कि "नूर" के मस्अले पर तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان का "रिसालए नूर" का मुत़ालआ़ फ़रमाइये।

मरह़बा आया है क्या मौसिम सुहाना नूर का *बुलबुलें गाती हैं गुलशन में तराना नूर का*
नूर की बारिश छमाछम होती आती है असीर *लो रज़ा के साथ बढ़ कर तुम भी ह़िस्सा नूर का*

﴾6﴿ क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा अ़ता फ़रमा दी

सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं **:** मैं ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की **: या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं आप से इर्शादे गिरामी सुनता हूं मगर भूल जाता हूं। इर्शाद फ़रमाया **:** अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ! अपनी चादर फैलाओ । मैं ने फैला दी तो **मालिके जन्नत,** क़ासिमे ने'मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते रह़मत से चादर में कुछ डाल दिया और फ़रमाया **: "ऐ अबू हुरैरा** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ! इसे उठा लो और सीने से लगा लो।" मैं ने हुक्म की ता'मील की। इस के बा'द (मेरा ह़ाफ़िज़ा इस क़दर मज़्बूत़ हो गया कि) मैं कोई भी चीज़ नहीं भूला। **(صَحِیحُ البخاریّ ج ۱، ص ۶۲، ۹۴ حدیث ۱۱۹، ۲۳۵۰، دارالکتب العلمیة بیروت)**

मालिके कौनैन हैं गो पास कुछ रखते नहीं
दो जहां की ने'मतें हैं इन के ख़ाली हाथ में

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सुन्नतों भरे बयानात सुनते रहिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा, **अल्लाहु ग़फ़्फ़ार** عَزَّوَجَلَّ ने मदनी सरकार, जनाबे अह़मदे मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बे शुमार इख़्तियारात से नवाज़ा है। बेशक माद्दी चीज़ें देना भी अपनी जगह मगर हमारे मीठे मीठे आक़ा मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तो नज़र न आने वाली शै **क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा** भी अपने ग़ुलाम और हमारे आक़ा ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को इनायत फ़रमा दी !

मेरी मदनी इल्तिजा है कि इस त़रह़ के ईमान अफ़रोज़ बयानात सुनने के लिये इश्क़े रसूल से भरपूर **दा'वते इस्लामी** के महके महके मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ रह़मतों और सुन्नतों भरे बयानात भी सुनने को मिलेंगे और **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत से ईमान को ताज़गी भी मिलती रहेगी। **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत फ़रमाते रहिये, **मदनी क़ाफ़िलों** के मुसाफ़िर बनिये, हो सके तो रोज़ाना मक्तबतुल मदीना का मत़्बूआ़ कम अज़ कम एक अ़दद रिसाला पढ़ लीजिये और **सुन्नतों भरे बयान** की एक ऑडियो या विडियो केसेट भी सुन लीजिये, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ दीन व दुन्या की बरकतों से मालामाल हो जाएंगे।

मैं गुमराही से कैसे निकला !

आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये केसेट सुनने के **तअ़ल्लुक़** से एक **मदनी बहार** अपने अन्दाज़ में पेश करता हूं : **तन्ज़ीमी** तरकीब के मुत़ाबिक़ हिन्द बग़दादी के एक शहर **मलका पूर** के एक इस्लामी भाई का बयान है : मैं ने तक़रीबन पांच साल मुल्क से बाहर गुज़ारे, **बद अ़क़ीदा** लोगों की सोह़बत रही जिस की नुहूसत से मेरे साफ़ सुथरे रह़मत भरे **इस्लामी अ़क़ाइद** में बिगाड़ आने लगा। इस दौरान हिन्द वापसी हुई, बुरे अ़क़ाइद पर मब्नी 30 ऑडियो और विडियो केसिटें भी साथ लेता आया। ख़ुदा का करना ऐसा हुवा कि एक **सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़** वाले इस्लामी भाई से मेरी मुलाक़ात हो गई, उन्हों ने प्यार भरे अन्दाज़ में मुझ पर **इन्फ़िरादी कोशिश** फ़रमाई और बड़ी **मह़ब्बत** के

साथ मुझे **दा'वते इस्लामी** के मक्तबतुल मदीना की जारी कर्दा एक V.C.D तोह़्फ़तन पेश की।[1] घर आ कर मैं ने V.C.D चला दी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ जूं जूं V.C.D चलती रही तूं तूं मेरे दिल से गुमराही की सियाही धुलती रही, V.C.D ख़त्म हो गई, मेरा दिल बे साख़्ता पुकार उठा कि यक़ीनन येह **V.C.D अहले ह़क़ की है** येह चेहरे झूटों के चेहरे नहीं हैं। मैं ने अ़हद कर लिया है कि इस V.C.D वालों के अ़क़ाइद को उ़म्र भर नहीं छोड़ूंगा। मैं ने जोश के आ़लम में साथ लाई हुई गुमराह कुन 30 ऑडियो और विडियो केसिटें ज़ाएअ़ कर दीं कि कहीं इन्हें सुन या देख कर कोई दूसरा मुसल्मान गुमराह न हो जाए।

सूना जंगल रात अंधेरी छाई बदली काली है

सोने वालो जागते रहियो चोरों की रखवाली है

अल्लाहु ग़फ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **इ़ल्मे ग़ैब** ह़ासिल है और सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लोगों को ग़ैब की ख़बरें बताते भी हैं। इस ज़िम्न में एक ईमान अफ़रोज़ रिवायत पढ़िये और झूमिये :

﴾7﴿ ग़ैबी ख़बर

ह़ज़रते सय्यिदतुना **उनैसा** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : मुझे मेरे वालिदे मोह़तरम ने बताया : मैं बीमार हुवा तो **सरकारे आ़ली वक़ार** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरी इयादत के लिये तशरीफ़ लाए देख कर

1. इस V.C.D का नाम "दीदारे अमीरे अहले सुन्नत" है। मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन ह़ासिल कर लीजिये। या इन्टर नेट पर वेब साइट www.dawateislamihind.net पर मुलाह़ज़ा फ़रमा लीजिये। **मजलिसे मक्तबतुल मदीना**

फ़रमाया : तुम्हें इस बीमारी से कोई ह़रज नहीं होगा लेकिन तुम्हारी उस वक़्त क्या ह़ालत होगी जब तुम मेरे विसाल के बा'द त़वील उ़म्र गुज़ार कर **नाबीना** हो जाओगे ? येह सुन कर मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं उस वक़्त ह़ुसूले सवाब की ख़ात़िर **सब्र** करूंगा। फ़रमाया : अगर तुम ऐसा करोगे तो बिग़ैर ह़िसाब के **जन्नत** में दाख़िल हो जाओगे। चुनान्चे साह़िबे शीरीं मक़ाल, शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, मह़बूबे रब्बे ज़ुल जलाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़ाहिरी विसाल के बा'द उन की बीनाई जाती रही, फिर एक अ़र्से के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन की बीनाई लौटा दी और उन का इन्तिक़ाल हो गया। (دَلَائِلُ النُّبُوَّة لِلْبَیْہَقِیّ ج۶ ص ۴۷۹، دارالکتب العلمیة بیروت)

ऐ अ़रब के चांद चमका दे मेरी लौह़े जबीं
हो ज़िया को फिर मदीने में नज़ारा नूर का

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **अल्लाह** के **मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से अपने ग़ुलामों की उ़म्रों से भी बा ख़बर हैं और इन के साथ जो कुछ पेश होने वाला है उसे भी जानते हैं। क़ुरआने पाक की बे शुमार आयाते मुबारका से **सरकारे मदीना** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के **इल्मे ग़ैब** का सुबूत मिलता है। यहां सिर्फ़ एक आयते करीमा पेश की जाती है चुनान्चे पारह 30 सूरतुत्तक्वीर की आयत नम्बर 24 में इर्शादे ख़ुदा वन्दी है :

وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِينٍ ﴿۲۴﴾
(پ ۳۰ التکویر ۲۴)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और येह नबी (صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم) ग़ैब बताने में बख़ील नहीं ।

सरे अ़र्श पर है तेरी गुज़र दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र
मलकूतो मुल्क में कोई शै नहीं वोह जो तुझ पे इयां नही

(ह़दाइके़ बख़्शिश)

बयान कर्दा रिवायत से येह भी मा'लूम हुवा कि जब कोई मुसीबत आए या मुसल्मान मा'ज़ूर हो जाए तो उसे **सब्र** कर के अज्र का ह़क़दार बनना चाहिये । चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत है कि नबिय्ये अकरम صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عزوجل फ़रमाता है : ''जब मैं अपने बन्दे की आंखें ले लूं फिर वोह सब्र करे, तो आंखों के बदले उसे **जन्नत** दूंगा ।''

(صَحِیحُ البُخارِیّ ج ۴ ص ۶ حدیث ۵۶۵۳، دارالکتب العلمیة بیروت)

है सब्र तो ख़ज़ानए फ़िरदौस भाइयो !
शिक्वा न आ़शिक़ों की ज़बानों पे आ सके

﴾8﴿ देव पैकर ऊंट

मक्कए मुकर्रमा زادھا اللہ شرفًا و تعظیمًا में एक ताजिर आया । उस से अबू जहल ने माल ख़रीद लिया मगर रक़म देने में पसो पेश की । वोह शख़्स परेशान हो कर अहले क़ुरैश के पास आ कर बोला : आप में से कोई ऐसा है जो मुझ ग़रीब और मुसाफ़िर पर रह़म खाए और अबू जह्ल से मेरा ह़क़ दिलवाए ? लोगों ने मस्जिद के कोने में बैठे हुए **एक साह़िब** की

त़रफ़ इशारा कर के कहा : इन से बात करो, येह ज़रूर तुम्हारी मदद करेंगे। अहले क़ुरैश के "उन साह़िब" के पास भेजने का मन्शा येह था कि अगर येह साह़िब अबू जह्ल के पास गए तो वोह इन की तौहीन करेगा और येह लोग (या'नी भेजने वाले) इस से ह़ज़ (या'नी लुत़्फ़) उठाएंगे। मुसाफ़िर ने उन साह़िब की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर सारा अह़वाल सुनाया। वोह उठे और अबू जह्ल के दरवाज़े पर तशरीफ़ लाए और दस्तक दी। अबू जह्ल ने अन्दर से पूछा : कौन है ? जवाब मिला : **मुह़म्मद** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم। अबू जह्ल दरवाज़े से बाहर निकला, उस के चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं। पूछा : कैसे आना हुवा ? बे कसों के फ़रियाद रस **मुह़म्मदे अ़रबी** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : इस का ह़क़ क्यूं नहीं देता ? अ़र्ज़ की : अभी देता हूं। येह कह कर अन्दर गया और रक़म ला कर मुसाफ़िर के ह़वाले कर दी और अन्दर चला गया। देखने वालों ने बा'द में पूछा : अबू जह्ल ! तुम ने बहुत अ़जीब काम किया। बोला : बस क्या कहूं, जब **मुह़म्मदे अ़रबी** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना नाम लिया तो एक दम मुझ पर ख़ौफ़ त़ारी हो गया। **जूंही में बाहर आया तो एक लरज़ा ख़ेज़ मन्ज़र मेरी आंखों के सामने था, क्या देखता हूं कि एक देव पैकर ऊंट खड़ा है। इतना ख़ौफ़नाक ऊंट मैं ने कभी नहीं देखा था। चुपचाप बात मान लेने ही में मुझे आ़फ़िय्यत नज़र आई वरना वोह ऊंट मुझे हड़प कर जाता।**

(الخصائص الکبرٰی للسیوطی ج ۱ ص ۲۱۲، دارالکتب العلمیۃ بیروت)

वल्लाह वोह सुन लेंगे फ़रियाद को पहुंचेंगे

इतना भी तो हो कोई जो "आह" करे दिल से

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरे सरदार, मेरे ग़म ख़्वार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शाने ह़िमायत निशान भी क्या ख़ूब है ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किस त़रह़ दुखियारों और ग़म के मारों की इमदाद फ़रमाते और मज़्लूमों के ह़ुक़ूक़ दिलवाते थे । और **अल्लाहु रह़मान** عَزَّوَجَلَّ भी अपने मह़बूब पर किस क़दर मेहरबान है और दुश्मन के मुक़ाबले में किस त़रह़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मदद फ़रमाता है ! अबू जह्ल जो कि अज़ली काफ़िर और सदा के लिये ईमान से मह़रूम था, इतना अ़ज़ीमुश्शान मो'जिज़ा आंखों से देखने के बा वुजूद भी बे ईमान ही रहा ! बस नसीब अपना अपना ।

कोई आया पा के चला गया कोई उ़म्र भर भी न पा सका

येह बड़े करम के हैं फ़ैसले येह बड़े नसीब की बात है

﴾9﴿ शेर आ गए !

अल्लाहु मुजीब عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के एक और अ़ज़ीमुश्शान मो'जिज़े और बद नसीब अबू जह्ल की कोर बात़िनी या'नी बात़िन के अन्धे पन की ह़िकायत समाअ़त फ़रमाइये : **हमारे** मीठे मीठे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم चूंकि लोगों को नेकी की

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

दा'वत इर्शाद फ़रमाया करते थे लिहाज़ा कुफ़्फ़ारे क़ुरैश आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दुश्मन हो गए थे और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को त़रह़ त़रह़ से ईज़ाएं पहुंचाते थे। एक बार **शहन्शाहे अबरार** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **वादिये ह़जून** की त़रफ़ तशरीफ़ ले गए। मौक़अ़ पा कर एक दुश्मने सितम गर नज़्र (नामी काफ़िर) आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को शहीद करने के इरादे से आगे बढ़ा। जूंही वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़रीब पहुंचा एक दम ख़ौफ़ज़दा हो कर पलटा और सर पर पाउं रख कर शह्‌र की त़रफ़ भाग खड़ा हुवा। जब अबू जह्ल ने येह ह़ालत देखी तो माजरा दरयाफ़्त किया। कहने लगा : "मैं ने आज ब इरादए क़त्ल **मुह़म्मदे अ़रबी** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पीछा किया था, जब मैं क़रीब पहुंचा तो क्या देखता हूं कि **मुंह खोले, दांत कचकचाते हुए चन्द शेर मेरी त़रफ़ बढ़े चले आ रहे हैं !** लिहाज़ा भागते ही बनी। इतना **अ़ज़ीमुश्शान मो'जिज़ा** सुन कर भी बद नसीब अबू जह्ल बोला : येह भी **मुह़म्मद** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जादू ही का कारनामा है। مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ"

(الخصائص الکبری للسیوطی ج ۱ ص ۲۱۵)

उफ़ रे मुन्किर येह बढ़ा जोशे तअ़स्सुब आख़िर
भीड़ में हाथ से कम बख़्त के ईमान गया

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾10﴿ अपने वालिदैने करीमैन को ज़िन्दा किया

हर एक को अपने मां बाप प्यारे होते हैं फिर हमारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को क्यूं प्यारे न होंगे ! अपने वालिदैने करीमैन को अपनी प्यारी उम्मत के साथ शुमूलिय्यत की ख़ातिर अ़ताए रब्बे क़ादिर عَزَّوَجَلَّ से कैसा अ़ज़ीमुश्शान मो'जिज़ा दिखाया। आप भी सुनिये और झूमिये : **इमाम अबुल क़ासिम अ़ब्दुर्रह़मान सुहैली** (मुतवफ़्फ़ा 581 हिजरी) **"अरौज़ुल उनुफ़"** में नक़्ल करते हैं कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا रिवायत करती हैं, **सरकारे मदीना** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ मांगी : **"या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरे मां बाप को ज़िन्दा कर दे।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने **ह़बीब** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ़ को शरफ़े क़बूलिय्यत बख़्शते हुए **दोनों को ज़िन्दा कर दिया** और वोह दोनों सुल्ताने दो जहान صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान लाए और फिर अपने अपने मज़ाराते त़य्यिबात में तशरीफ़ ले गए। (الرّوض الانف ج ۱ ص ۲۹۹ دارالکتب العلمیۃ بیروت)

इजाबत का सहरा इनायत का जोड़ा — दुल्हन बन के निकली दुआ़ए मुह़म्मद
इजाबत ने झुक कर गले से लगाया — बढ़ी नाज़ से जब दुआ़ए मुह़म्मद

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

वालिदैने करीमैन तौह़ीद पर थे

हमारे प्यारे प्यारे आक़ा मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अभी अपनी अम्मी जान **सय्यिदतुना आमिना**

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के मुबारक पेट में थे कि सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वालिदे माजिद **ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दुन्या से पर्दा फ़रमा लिया और जब मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उ़म्र शरीफ़ 5 या 6 बरस की हुई तो वालिदए माजिदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا भी दुन्या से रुख़्सत हो गईं और **मह़बूबे रब्बे ज़ुल जलाल**, साह़िबे जूदो नवाल, सरकारे ख़ुश ख़िसाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **चालीस साल** की उ़म्र शरीफ़ में ए'लाने नुबुव्वत फ़रमाया। इस से कोई येह न समझे कि **सुल्त़ाने दारैन**, सरवरे कौनैन, नानाए ह़सनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के **वालिदैने करीमैन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا **مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ** ह़ालते कुफ़्र में फ़ौत हुए थे और अ़ज़ाबे क़ब्र में मुब्तला थे इस लिये **सरकारे दो जहान** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन को कलिमा पढ़ा कर मुसल्मान किया ताकि अ़ज़ाब से नजात पाएं। हरगिज़ ऐसा नहीं था बल्कि वोह दोनों तौह़ीद पर क़ाइम थे और ज़िन्दगी में कभी भी उन्हों ने बुत परस्ती नहीं की थी। मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें अपनी उम्मत में शामिल करने के लिये दोबारा ज़िन्दा फ़रमा कर कलिमा पढ़ाया।

मुझ को अब कल्मा पढ़ा जा मेरे मदनी आक़ा
तेरा मुजरिम शहा दुन्या से चला जाता है

यूनुस عَلَیْہِ السَّلَام वाली मछली जन्नत में जाएगी

ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल ह़क़्क़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ "तफ़्सीरे रूहुल बयान" में नक़्ल फ़रमाते हैं: "ह़ज़रते **सय्यिदुना यूनुस** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام

तीन दिन या सात दिन या चालीस दिन मछली के पेट में रहे। लिहाज़ा वोह **मछली** जन्नत में जाएगी।" (روحُ البیان، ج۵ ص۲۲۶،۵۱۸، کوئٹہ)

वालिदैने करीमैन जन्नती हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर फ़रमाइये ! जिस मछली के पेट में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام चन्द दिन रहें वोह मछली जन्नत में जाए और जिस **बत़्ने आमिना** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا में ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के आक़ा, **मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कई माह तक तशरीफ़ फ़रमा रहें वोह **बीबी आमिना** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ कुफ़्र पर दुन्या से जाएं और अ़ज़ाबे क़ब्र में मुब्तला रहें येह क्यूं कर हो सकता है। यक़ीनन **सुल्त़ाने कौनैन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के **वालिदैने करीमैन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की ह़याते त़य्यिबा का हर लम्ह़ा तौह़ीद पर गुज़रा और वोह **जन्नती** हैं। बल्कि हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के **तमाम आबाओ अज्दाद** अहले ह़क़ थे। तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **फ़तावा रज़विय्या जिल्द** 30 **सफ़ह़ा** 267 ता 305 का मुत़ालआ़ फ़रमाइये।

ख़ुदा ने किया उन को बे मिस्ल पैदा नहीं दो जहां में मिसाले मुह़म्मद
ख़ुदा और नबी का है उस पे तो साया जिसे हर घड़ी है ख़याले मुह़म्मद

﴾11﴿ मुर्दा बकरी ज़िन्दा हो गई

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक बार नबियों के सरदार, सरकारे ज़ी वक़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबारे गोहर बार में

ह़ाज़िर हुए तो **मदीने के ताजदार** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए पुर अन्वार पर भूक के आसार देखे। घर आ कर ज़ौजए मोह़तरमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से पूछा : घर में कुछ खाने के लिये भी है ? अ़र्ज़ की : घर में **एक बकरी** और थोड़े से **जव** के दानों के इ़लावा कुछ भी नहीं। **बकरी** ज़ब्ह़ कर दी गई, जव पीस कर रोटियां पका कर सालन में भिगो कर सरीद तय्यार किया गया। **सय्यिदुना जाबिर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने वोह सरीद का बरतन उठा कर **मदीने के ताजवर** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे अन्वर में पेश कर दिया।

रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे हुक्म दिया : "ऐ जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! जाओ लोगों को बुला लाओ।" जब **सह़ाबए किराम** عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ह़ाज़िर हो गए तो इर्शाद हुवा : मेरे पास थोड़े थोड़े भेजते जाओ। चुनान्चे सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ह़ाज़िर होते और खाना तनावुल फ़रमा कर चले जाते, जब सब खाना खा चुके तो मैं ने देखा कि बरतन में इब्तिदाअन जितना खाना था उतना ही अब भी मौजूद है। नीज़ **सरकारे आ़ली वक़ार** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم खाने वालों को फ़रमा रहे थे कि हड्डी मत तोड़ना। **सरकारे दो जहां** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सब हड्डिया जम्अ़ करने का हुक्म फ़रमाया। जब हड्डियां जम्अ़ हो गईं तो **सरवरे काएनात,** शहन्शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते मुबारक हड्डियों पर रख कर कुछ पढ़ा। **हड्डियों में ह़रकत पैदा हुई और देखते ही देखते बकरी कान झाड़ती हुई उठ खड़ी हुई।** सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **ऐ जाबिर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! अपनी

बकरी ले जाओ। मैं बकरी ले कर जब घर आया तो ज़ौजए मोह़तरमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने पूछा : येह **बकरी** कहां से लाए ? मैं ने जवाब दिया : ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह वोही **बकरी** है जो हम ने ज़ब्ह़ की थी। हमारे प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुआ़ से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इसे हमारे लिये ज़िन्दा कर दिया है।

(الخصائص الکبرٰی ج۲ص۱۱۲،دار الکتب العلمیة بیروت)

इक दिल हमारा क्या है आज़ार इस का कितना
तुम ने तो चलते फिरते मुर्दे जिला दिये हैं

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾12﴿ फ़ौत शुदा मदनी मुन्ने ज़िन्दा हो गए !

मशहूर आ़शिक़े रसूल ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रह़मान जामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی रिवायत फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अपने ह़क़ीक़ी मदनी मुन्नों की मौजूदगी में बकरी ज़ब्ह़ की थी। जब फ़ारिग़ हो कर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه तशरीफ़ ले गए तो वोह दोनों मदनी मुन्ने छुरी ले कर छत पर जा पहुंचे, बड़े ने अपने छोटे भाई से कहा : आओ ! मैं भी तुम्हारे साथ ऐसा ही करूं जैसा कि हमारे वालिद साह़िब ने इस बकरी के साथ किया है। चुनान्चे बड़े ने छोटे को बांधा और ह़ल्क़ पर छुरी चला दी और सर जुदा कर के हाथों में उठा लिया ! जूंही उन की अम्मी जान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने येह मन्ज़र देखा तो उस के पीछे दौड़ीं वोह डर कर भागा और छत से गिरा और फ़ौत हो गया। उस साबिरा ख़ातून ने चीख़ो पुकार और किसी क़िस्म का वावेला न किया कि कहीं अ़ज़ीमुश्शान,

मेहमान, सुल्ताने दो जहान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم परेशान न हो जाएं, निहायत सब्रो इस्तिक़्लाल से दोनों की नन्ही लाशों को अन्दर ला कर उन पर कपड़ा उढ़ा दिया और किसी को ख़बर न दी यहां तक कि ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी न बताया। दिल अगर्चे सदमे से ख़ून के आंसू रो रहा था मगर चेहरे को तरो ताज़ा व शिगुफ़्ता रखा और खाना वग़ैरा पकाया। सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और खाना आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आगे रखा गया। उसी वक़्त जिब्रईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि जाबिर से फ़रमाओ, अपने फ़रज़न्दों को लाए ताकि वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ खाना खाने का शरफ़ ह़ासिल कर लें। सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : अपने फ़रज़न्दों को लाओ ! वोह फ़ौरन बाहर आए और ज़ौजा से पूछा, फ़रज़न्द कहां हैं ? उस ने कहा हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ कीजिये कि वोह मौजूद नहीं हैं। सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह तआ़ला** का फ़रमान आया है कि उन को जल्दी बुलाओ ! ग़म की मारी ज़ौजा रो पड़ी और बोली : ऐ जाबिर ! अब मैं उन को नहीं ला सकती। ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : आख़िर बात क्या है ? रोती क्यूं हो ? ज़ौजा ने अन्दर ले जा कर सारा माजरा सुनाया और कपड़ा उठा कर मदनी मुन्नों को दिखाया, तो वोह भी रोने लगे क्यूं कि वोह उन

के ह़ाल से बे ख़बर थे। पस ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने दोनों की नन्ही नन्ही लाशों को ला कर हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़दमों में रख दिया। उस वक़्त घर से रोने की आवाज़ें आने लगीं। **अल्लाहु** रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ ने जिब्रईले अमीन عَلَیْهِ السَّلَام को भेजा और फ़रमाया : ऐ जिब्रईल ! मेरे मह़बूब عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से कहो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : ऐ प्यारे ह़बीब ! तुम दुआ़ करो हम इन को ज़िन्दा कर देंगे। **हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह़्तशम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **ने दुआ़ फ़रमाई और अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के हुक्म से दोनों मदनी मुन्ने उसी वक़्त ज़िन्दा हो गए।** (شواهد النبوة، ص ۱۰۵، مکتبة الحقیقه ترکی مدارج النبوت حصه ۱ ص ۱۹۹) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।**

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

क़ल्बे मुर्दा को मेरे अब तो जिला दो आक़ा
जाम उल्फ़त का मुझे अपनी पिला दो आक़ा

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب !　　صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! मेरे प्यारे आक़ा मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की भी क्या ख़ूब शान है कि मुख़्तसर सा खाना बहुत सारे लोगों ने खा लिया फिर भी उस में किसी क़िस्म की कमी वाक़ेअ़ न हुई और फिर बकरी के गोश्त की बची हुई हड्डियों पर कलाम पढ़ा तो गोश्त पोस्त पहन कर बि ऐ़निही वोही बकरी कान झाड़ती हुई उठ खड़ी हुई। नीज़ ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه

के फ़ौत शुदा दोनों हक़ीक़ी मदनी मुन्नों को भी बि इज़्निल्लाह عَزَّوَجَلَّ ज़िन्दा कर दिया।

मुर्दों को जिलाते है रोतों को हंसाते हैं आलाम मिटाते हैं बिगड़ी को बनाते हैं

सरकार खिलाते हैं सरकार पिलाते हैं सुल्तानो गदा सब को सरकार निभाते हैं

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

गुस्ताख़ को ज़मीन ने क़बूल न किया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अब एक मुन्किरे शाने रिसालत की शक़ावत की इब्रत नाक **ह़िकायत** समाअ़त फ़रमाइये और देखिये कि **अल्लाहुस्सलाम** عَزَّوَجَلَّ अपने मह़बूब के दुश्मनों से किस त़रह़ इन्तिक़ाम लेता है। **ह़ज़रते** सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि : एक नस्रानी मुसल्मान हो गया और उस ने सूरतुल बक़रह और सूरए आले इमरान पढ़ ली। पस वोह **नबिय्ये रह़मत** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये किताबत किया करता था, इस के बा'द वोह (मुरतद हो कर) दोबारा नस्रानी बन गया और बका करता था : **مَا یَدْرِیْ مُحَمَّدٌ اِلَّا مَا کَتَبْتُ لَہٗ** या'नी ''**मुह़म्मद** (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) वोही जानते हैं जो मैं ने उन के लिये लिख दिया है।'' थोड़े ही दिनों में **अल्लाह** तआ़ला ने उस की **गरदन तोड़** दी या'नी उस की मौत ग़ैर फ़ित़री त़रीक़े से हुई।

उस के आदमिय्यों ने गढ़ा खोद कर उस को दफ़्न कर दिया, लेकिन सुब्ह़ के वक़्त **ज़मीन ने उस को निकाल कर बाहर फेंक दिया।** वोह कहने लगे कि येह **मुह़म्मद** (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) और उन के

साथियों ने किया होगा, क्यूं कि येह उन के पास से भाग कर आया था, इस लिये हमारे साथी की क़ब्र खोद डाली। **दूसरी मर्तबा** उन्हों ने उस के लिये और गहरा गढ़ा खोदा, लेकिन सुब्ह़ वोह फिर बाहर ज़मीन पर पड़ा हुवा था, कहने लगे : येह **मुह़म्मद** (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) और उन के साथियों ने किया होगा, क्यूं कि येह उन के पास से भाग कर आया था, लिहाज़ा हमारे साथी की क़ब्र खोद डाली। **तीसरी दफ़्अ़ा** उन्हों ने उस के लिये जितना गहरा खोद सकते थे उतना गहरा गढ़ा खोदा, लेकिन सुब्ह़ के वक़्त उसे ज़मीन के ऊपर पड़ा हुवा पाया। **अब** उन्हों ने जाना कि उन के साथ येह सुलूक इन्सानों की जानिब से नहीं है, फिर उन्हों ने उस को उसी त़रह़ बाहर पड़ा हुवा छोड़ दिया। (صَحِیحُ البُخارِیّ ج۲ ص۵۰۶حدیث ۳۶۱۷دار الکتب العلمیة بیروت، صَحِیح مُسلِم ص۱۴۹۷حدیث ۲۷۸۱ دار ابن حزم بیروت)

न उठ सकेगा क़ियामत तलक ख़ुदा की क़सम
कि जिस को तूने नज़र से गिरा के छोड़ दिया

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इल्मे मुस्तफ़ा पर ए'तिराज़ में हलाकत है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? उस बद क़िस्मत ने काएनात की सब से बेहतरीन सोह़बत की क़द्र न की और बद बख़्ती के सबब **मुरतद** हो कर अपने रह़मत वाले मुश्फ़िक़ व मेहरबान आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के **इल्मे शरीफ़** पर ए'तिराज़ किया। और नतीजतन वोह ऐसा तबाह व बरबाद हुवा कि **उसे ज़मीन ने भी क़बूल नहीं**

किया । येह भी मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के **इ़ल्मे मुबारक** पर ए'तिराज़ करना दोनों जहां में बाइ़से हलाकत है। मोमिन शाने रिसालत और इ़ल्मे मुस्त़फ़ा عَلیہِ التَّحِیَّۃُ وَ الثَّناء पर हरगिज़ ए'तिराज़ नहीं कर सकता येह मुनाफ़िक़ीन ही का ह़िस्सा है। किसी ने सच ही कहा है : اَلنِّفاقُ یُوْرِثُ الْاِعْتِراض या'नी मुनाफ़क़त ए'तिराज़ को जनम देती है।

करें मुस्त़फ़ा की इहानतें खुले बन्दों इस पे येह जुरअतें

कि मैं क्या नहीं हूं मुह़म्मदी ! अरे हां नहीं ! अरे हां नहीं !

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी **सुन्नत** से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा।

(مِشْکاۃُ الْمَصابِیح، ج ۱ ص ۵۵ حدیث ۱۷۵ دارالکتب العلمیة بیروت)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा

जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

"हाथ मिलाना सुन्नत है" के चौदह ह़ुरूफ़ की निस्बत से हाथ मिलाने के 14 मदनी फूल

﴾1﴿ दो मुसल्मानों का ब वक़्ते मुलाक़ात सलाम कर के दोनों हाथों से **मुसाफ़ह़ा** करना या'नी दोनों **हाथ मिलाना** सुन्नत है ﴾2﴿ रुख़्सत होते वक़्त भी सलाम कीजिये और हाथ भी मिला सकते हैं ﴾3﴿ नबिय्ये मुकर्रम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुअ़ज़्ज़म है : "जब दो मुसल्मान मुलाक़ात करते हुए **मुसाफ़ह़ा** करते हैं और एक दूसरे से ख़ैरियत दरयाफ़्त करते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के दरमियान सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है जिन में से निन्नान्वे रह़मतें ज़ियादा पुरतपाक त़रीक़े से मिलने वाले और अच्छे त़रीक़े से अपने भाई से ख़ैरियत दरयाफ़्त करने वाले के लिये होती हैं।" (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط لِلطَّبَرانِی ج۵ ص ۳۸۰ رقم ۷۶۷۲) ﴾4﴿ "जब दो दोस्त आपस में मिलते हैं और **मुसाफ़ह़ा** करते हैं और नबी (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर दुरूदे पाक पढ़ते हैं तो उन दोनों के जुदा होने से पहले पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।" (شُعَبُ الْاِیْمَان لِلْبَیْہَقِی حدیث ۸۹۴۴ ج ۶ ص ۴۷۱ دارالکتب العلمیة بیروت) ﴾5﴿ हाथ मिलाते वक़्त दुरूद शरीफ़ पढ़ कर हो सके तो येह दुआ़ भी पढ़ लीजिये : "يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ" (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए) ﴾6﴿ दो मुसल्मान हाथ मिलाने के दौरान जो दुआ़ मांगेंगे اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **क़बूल** होगी हाथ जुदा होने से पहले पहले दोनों की मग़्फ़िरत हो जाएगी اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ (مُلخصاً مُسنَد اِمام احمد بن حَنبل ج ۴ ص ۲۸۶ حدیث ۱۸۴۵۴ دارالفکر بیروت) ﴾7﴿

आपस में हाथ मिलाने से दुश्मनी दूर होती है ﴾8﴿ **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जो मुसल्मान अपने भाई से मुसाफ़ह़ा करे और किसी के दिल में दूसरे से अ़दावत न हो तो हाथ जुदा होने से पहले **अल्लाह तआ़ला** दोनों के गुज़श्ता गुनाहों को बख़्श देगा और जो कोई अपने मुसल्मान भाई की त़रफ़ मह़ब्बत भरी नज़र से देखे और उस के दिल या सीने में अ़दावत न हो तो निगाह लौटने से पहले दोनों के पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे । (كَنْزُ الْعُمَّال ج ٩ ص ٥٧) ﴾9﴿ जितनी बार मुलाक़ात हो हर बार हाथ मिला सकते हैं ﴾10﴿ दोनों त़रफ़ से एक एक हाथ मिलाना सुन्नत नहीं मुसाफ़ह़ा दो हाथ से करना सुन्नत है ﴾11﴿ बा'ज़ लोग सिर्फ़ उंग्लियां ही आपस में टकरा देते हैं येह भी सुन्नत नहीं ﴾12﴿ हाथ मिलाने के बा'द ख़ुद अपना ही हाथ **चूम** लेना मक्रूह है । हाथ मिलाने के बा'द अपनी हथेली चूम लेने वाले इस्लामी भाई अपनी आ़दत निकालें (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 115, मुलख़्ख़सन) ﴾13﴿ अगर अम्रद (या'नी ख़ूब सूरत लड़के) से हाथ मिलाने में शह्वत आती हो तो उस से हाथ मिलाना जाइज़ नहीं बल्कि अगर देखने से शह्वत आती हो तो अब देखना भी गुनाह है (درمختار ج٢ ص٩٨ دار المعرفة بيروت) ﴾14﴿ **मुसाफ़ह़ा** करते (या'नी हाथ मिलाते) वक़्त सुन्नत येह है कि हाथ में रुमाल वग़ैरा ह़ाइल न हो, दोनों हथेलियां ख़ाली हों और हथेली से हथेली मिलनी चाहिये । (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 98)

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ दो कुतुब "बहारे शरीअ़त" ह़िस्सा 16 (312 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तरबियत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **मदनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

दीदारे मुस्त़फ़ा

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के **तीन रोज़ा** सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ के इख़्तिताम पर **आ़शिक़ाने रसूल** के बे शुमार **मदनी क़ाफ़िले** सुन्नतों की तरबियत के लिये शह्‌र ब शह्‌र और गाउं ब गाउं सफ़र पर रवाना होते हैं। इसी ज़िम्न में बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़ (सि. 1426 हि.) से आगरा ताज कोलोनी का एक मदनी क़ाफ़िला सफ़र करता हुवा तरकीब के मुत़ाबिक़ एक मस्जिद में क़ियाम पज़ीर हुवा। शब को जब सब सो गए तो **मदनी क़ाफ़िले** में शरीक एक नए इस्लामी भाई की क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी और उन को ख़्वाब में **मदीने के ताजदार** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दीदार हो गया। वोह बहुत ख़ुश हुए, **दा'वते इस्लामी** की ह़क़्क़ानिय्यत के दिल व जान से **मो'तरिफ़** हो कर **मदनी माह़ोल** से वाबस्ता हो गए।

कोई आया पा के चला गया कोई उ़म्र भर भी न पा सका

येह बड़े करम के हैं फ़ैसले येह बड़े नसीब की बात है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत की बरकत से एक ख़ुश क़िस्मत इस्लामी भाई को ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हो गई। **दा'वते इस्लामी** के आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत के तो क्या कहने ! इसी त़रह़ की सोह़बत की बरकत की मज़ीद एक **मदनी बहार** सुनिये और झूमिये :

मैं ग़ैर मुल्की फ़िल्मों का शौक़ीन था

एक फ़ौजी इस्लामी भाई ने कुछ इस त़रह़ लिख कर दिया कि मैं बहुत सारी बुराइयों की अंधेरियों में भटक रहा था, ग़ैर मुल्की गानों के सेंकड़ों केसेट मेरे पास मौजूद थे जिन में مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ कई गाने कुफ़्रियात पर मुश्तमिल थे, ग़ैर मुल्की फ़िल्में देखना मेरा मह़बूब मश्ग़ला था, नीज़ फ़िल्मी गाने और मुज़ाह़िया चुटकुले सुनना, ताश खेलना वग़ैरा मेरे मा'मूलात थे, इन्तिहाई ग़ैर सन्जीदा और वालिदैन का भी ह़द दरजा ना फ़रमान था **अल ग़रज़** वोह कौन सी बुराई थी जो मुझ में नहीं थी। ऐसे में फ़ौज में मुलाज़िम हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के एक बा इ़मामा इस्लामी भाई से मुलाक़ात हो गई। उन्हों ने मेरे ऊपर **इन्फ़िरादी कोशिश** की और मुझे हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में ले जाना

शुरूअ़ कर दिया, उन के ह़ुस्ने अख़्लाक़ और प्यारी प्यारी सुन्नतों भरी बातों से **मुतअस्सिर** हो कर मैं ने साबिक़ा तमाम गुनाहों से तौबा कर ली और अब اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **मुकम्मल** त़ौर पर मदनी माह़ोल से वाबस्ता हूं, 30 दिन के **मदनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सफ़र की सआ़दत भी मिली है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह बयान देते वक़्त एक शो'बे की अ़लाक़ाई मुशावरत के निगरान की ह़ैसिय्यत से नमाज़ों और सुन्नतों की धूमें मचा रहा हूं।

नेकों की मह़ब्बत कब कारे सवाब है !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत और अच्छों की **मह़ब्बत** ने एक औबाश आदमी को कहां से कहां पहुंचा दिया ! आप भी हमेशा अच्छी सोह़बत इख़्तियार करने और अच्छों से **मह़ब्बत** रखने का ज़ेह्न बना लीजिये, **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र करने वाले ख़ुश नसीबों को इन दोनों ने'मतों के ह़ुसूल का बेहतरीन मौक़अ़ नसीब हो जाता है। अच्छों की **मह़ब्बत** के क्या कहने ! मगर इस मह़ब्बत से मक़्सूद सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा हो, दुन्यावी या कारोबारी मफ़ाद की वजह से या किसी की दिलरुबा अदाओं या चटपटी बातों या ह़ुस्नो जमाल या दौलत व माल की वज्ह से की जाने वाली मह़ब्बत **अल्लाह** के लिये नहीं कहलाती यहां तक कि सिर्फ़ ख़ूनी रिश्ते के जोश

के सबब मां बाप, औलाद या किसी रिश्तेदार से महब्बत करना भी कारे सवाब नहीं, जब तक रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ पाने की निय्यत न हो। ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **महब्बत**'' के **मुतअ़ल्लिक़** वज़ाहत करते हुए मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : किसी बन्दे से सिर्फ़ इस लिये महब्बत करे कि रब तआला इस से राज़ी हो जाए, इस (महब्बत) में दुन्यावी ग़रज़ (और) रिया (या'नी दिखावा) न हो। इस **महब्बत** में मां बाप, औलाद (और) अहले क़राबत (या'नी रिश्तेदार) मुसल्मानों से महब्बत सब दाख़िल हैं जब कि रिज़ाए इलाही (عَزَّوَجَلَّ) के लिये (येह महब्बतें) हों। हज़राते औलिया (رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى), अम्बिया (عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) से **महब्बत** سُبْحٰنَ الله ! येह तो **حُبٌّ فِى الله** (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में महब्बत) का आ'ला दरजा है, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ नसीब करे। (मिरआत, जि. 6, स. 584)

"महब्बते रसूल" के आठ हुरूफ़ की निस्बत से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये महब्बत रखने के 8 फ़ज़ाइल

(1) अल्लाह तआला क़ियामत के दिन फ़रमाएगा : कहां हैं जो मेरे जलाल की वज्ह से आपस में महब्बत रखते थे, आज मैं उन को अपने साए में रखूंगा, आज मेरे साए के सिवा कोई साया नहीं[1]

[1] مُسلِم ص ۱۳۸۸ حديث ۲۵۶۶

(2) अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है जो लोग मेरी वज्ह से आपस में महब्बत रखते हैं और मेरी वज्ह से एक दूसरे के पास बैठते हैं और आपस में मिलते जुलते हैं और माल ख़र्च करते हैं उन से मेरी महब्बत वाजिब हो गई[1]

(3) अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया : जो लोग मेरे जलाल की वज्ह से आपस में महब्बत रखते हैं उन के लिये नूर के मिम्बर होंगे। अम्बिया व शुहदा उन पर ग़िब्त़ा (या'नी रश्क) करेंगे[2]

(4) दो शख़्सों ने **अल्लाह** के लिये बाहम महब्बत की और एक मशरिक़ में है दूसरा मग़रिब में क़ियामत के दिन **अल्लाह तआ़ला** दोनों को जम्अ़ करेगा और फ़रमाएगा येही वोह है जिस से तूने मेरे लिये महब्बत की थी

(5) जन्नत में याक़ूत के सुतून हैं उन पर ज़बर जद के बालाख़ाने हैं, उन के दरवाज़े खुले हुए हैं, वोह ऐसे रोशन हैं जैसे चमकदार सितारे। लोगों ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! उन में कौन रहेगा ? फ़रमाया : वोह लोग जो **अल्लाह** के लिये आपस में महब्बत रखते हैं, एक जगह बैठते हैं, आपस में मिलते है[4]

(6) अल्लाह के लिये महब्बत रखने वाले अ़र्श के गिर्द याक़ूत की कुरसी

مـــــــــــــــــــــــــدینـــه

[1] الموطا ج ۲ ص ۴۳۹ حدیث ۱۸۲۸ [2] ترمذی ج ۴ ص ۱۷۴ حدیث ۲۳۹۷،
[3] شعب الایمان ج۶ ص۴۹۲ حدیث ۹۰۲۲ [4] شعب الایمان ج۶ ص۴۸۷ حدیث ۹۰۲۲

पर होंगे[1]

(7) जो किसी से **अल्लाह** के लिये महब्बत रखे **अल्लाह** के लिये दुश्मनी रखे और **अल्लाह** के लिये दे और **अल्लाह** के लिये मन्अ़ करे उस ने अपना ईमान कामिल कर लिया[2]

(8) दो शख़्स जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये बाहम महब्बत रखते हैं, उन के दरमियान में जुदाई उस वक़्त होती है कि उन में से एक ने कोई गुनाह किया।[3]

या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जो महब्बत हो उस की पहचान येह है कि अगर एक ने गुनाह किया तो दूसरा उस से जुदा हो जाए। (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये पढ़िये मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ बहारे शरीअ़त हिस्सा 16 सफ़हा 217 ता 222)

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक्तबतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोहफ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने महल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये।

مدینہ

1 المعجم الکبیر ج ۳ ص ۱۵۰ حدیث ۳۹۷۳ 2 ابو داوٗد ج ۴ ص ۲۹۰ حدیث ۴۶۸۱

3 الادب المفرد ص ۱۲۱ حدیث ۴۰۶

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

दुरूद की जगह صلعم लिखना ह़राम है

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی फ़रमाते हैं : उ़म्र में एक मर्तबा **दुरूद शरीफ़** पढ़ना फ़र्ज़ है और हर जल्सए ज़िक्र में **दुरूद शरीफ़** पढ़ना वाजिब ख़्वाह ख़ुद नामे अक़्दस ले या दूसरे से सुने। अगर एक मजलिस में सो100 बार ज़िक्र आए तो हर बार **दुरूद शरीफ़** पढ़ना चाहिये। अगर नामे अक़्दस लिया या सुना तो **दुरूद शरीफ़** उस वक़्त न पढ़ा तो किसी दूसरे वक़्त में उस के बदले का पढ़ ले। नामे अक़्दस लिखे तो **दुरूद शरीफ़** ज़रूर लिखे कि बा'ज़ उ़लमा के नज़्दीक उस वक़्त **दुरूद** लिखना वाजिब है। **अक्सर लोग आजकल दुरूद शरीफ़** (या'नी मुकम्मल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लिखने) **के बदले صلعم، عم، ؐ، ؐ लिखते हैं येह ना जाइज़ व सख़्त ह़राम है।** यूंही رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की जगह ؓ, رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की जगह ؒ लिखते हैं येह भी न चाहिये। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 101,102, मक्तबतुल मदीना) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इस्मे मुबारक लिख कर उस पर "ج" न लिखा करें, عَزَّوَجَلَّ या جَلَّ جَلَالُه पूरा लिखिये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके मदनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमे'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **मदनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबियत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये **मदनी इन्आ़मात** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

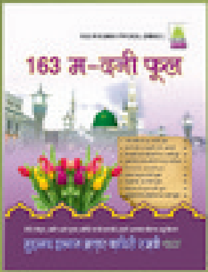

M.R.P. ₹ 00/-

01081802

Maktabatul Madina

Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372
Faizane Madina, Teen Koniya Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200
421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi
011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025*T&C Apply
feedbackmmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net